ISSN : 2581-3145

मार्च, 2019

आलोकपर्व

वर्ष : 6 अंक : 4

RNI NO. DELBIL/2013/50974

कीमत : 40 रुपये

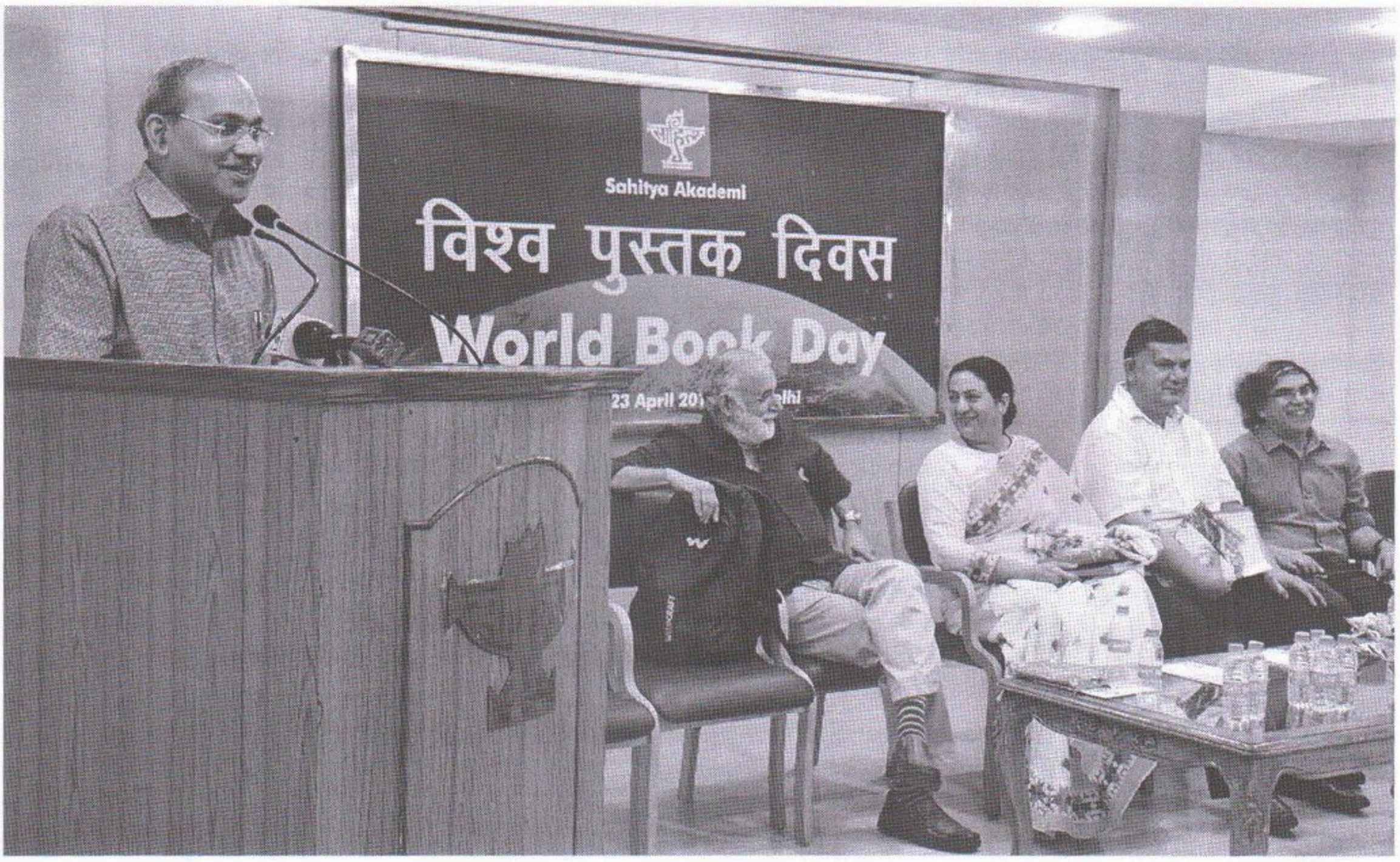

विश्व पुस्तक दिवस पर साहित्य अकादेमी द्वारा

'पुस्तकें, जिन्होंने रचा हमारा संसार' विषय पर परिसंवाद संपन्न

आलोकपर्व नेटवर्क

साहित्य अकादेमी द्वारा आज विश्व पुस्तक दिवस पर 'पुस्तके, जिन्होंने रचा हमारा संसार' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में विभिन्न क्षेत्रों के महत्त्वपूर्ण लोगों ने पुस्तकों के साथ अपने रिश्तों को पाठकों के साथ साझा किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने गमछा और पुस्तकें भेंट कर सभी वक्ताओं का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने कहा कि पुस्तकें केवल ज्ञान नहीं बढ़ाती बल्कि हमें विशेष बनाती है। किताबें माँ जैसी होती है जो हमें बेहतर नागरिक बनने की शिक्षा देती हैं। किताबों के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है और इस डिजिटल युग में उनका महत्त्व कम नहीं हुआ है।

पहले वक्ता के रूप में बोलते हुए एडीशनल डिप्टी कंट्रोलर एंड आडिटर जनरल, सीएजी के. के. श्रीवास्तव ने कहा कि वे आधुनिक समाज के लिए दो लेखकों सिग्मंड फ्रायड और वल्दीवो निकोवोव की पुस्तकों को बेहद महत्त्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि इनके जरिये ही समाज में मानसिक रोगियों के इलाज के लिए बेहतर समझ विकसित हो पाई। उन्होंने सिग्मंड फ्रायड की 1902 में प्रकाशित पुस्तक तथा निकोवोव की 2018 में प्रकाशित पुस्तक की जानकारी पाठकों से साझा करते हुए कहा कि इनसे हमारे सपनों को व्यवस्थित रूप से विश्लेषित करने की परंपरा शुरू हो पाई जो आगे चलकर मानसिक रोगो के इलाज में बेहद कारगर साबित हुई। प्रख्यात नाट्यकर्मी एम.के रैना ने बताया कि उन्होंने पहली पुस्तक अपने कॉलेज के पुस्तकालय में पढ़ी थी और वह अब्राहम लिंकन द्वारा लिखी गई थी। दूसरी पुस्तक जिससे वे सबसे ज्यादा प्रभावित हुए वे गाँधी जी की आत्मकथा थी। उन्होंने कहा कि गाँधी मेरे रॉक स्टार थे और आज भी है। उन्होंने प्रेमचंद की कहानी कफन का जिक्र करते हुए कहा कि इन सबके जरिये ही मैं अपने समाज को वर्तमान से जोड़ पाता हूँ। इसी क्रम में

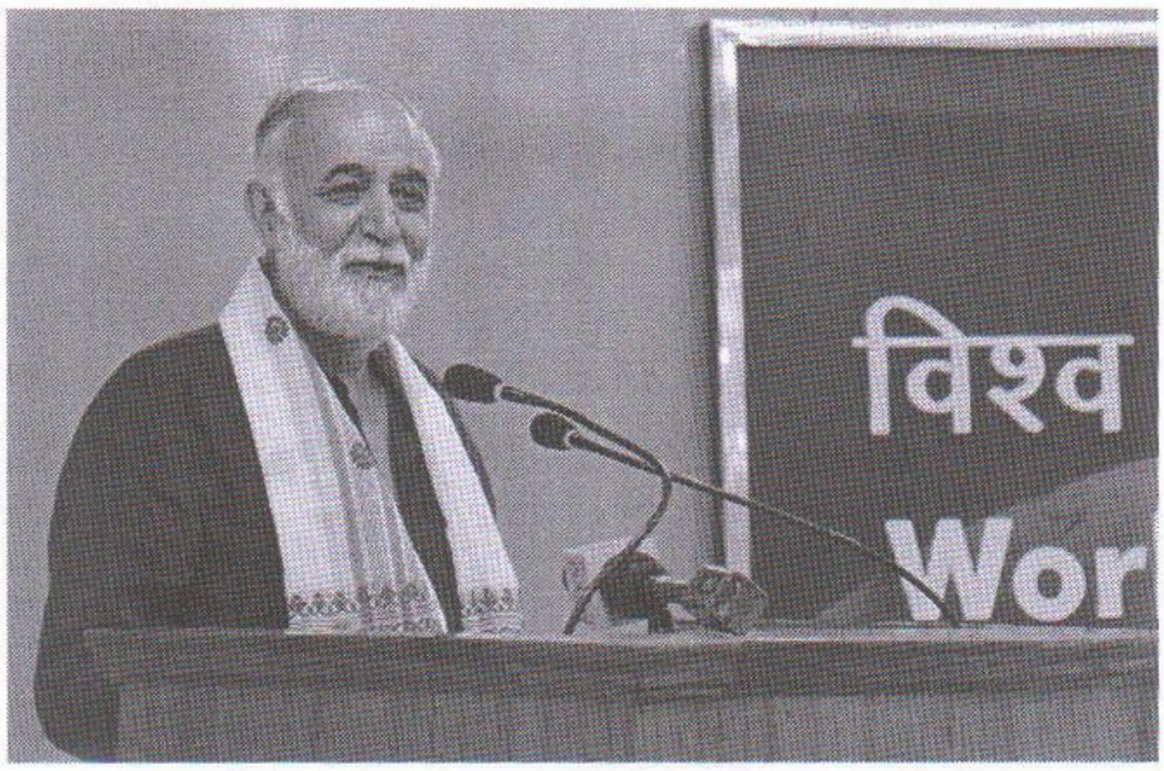

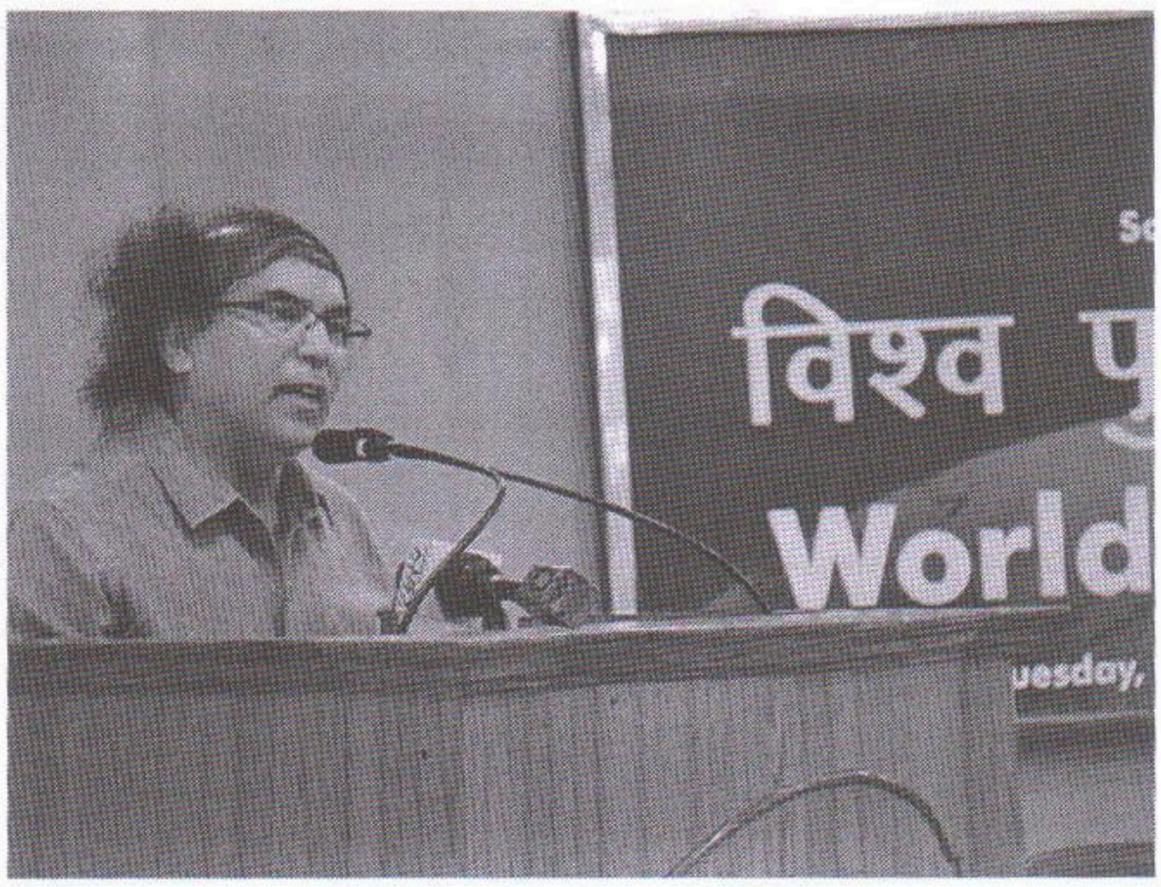

मानवीय जीवन को अलग तरीके से समझाती हैं पुस्तकें - एम.के. रैना

प्रदर्शनकारी कलाओं के लिए पुस्तकें एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है - सोरेन लोवेन

पुस्तकों से हम प्यार और सादगी से जीना सीख सकते हैं - सतवंत अटवाल त्रिवेदी

उन्होंने ब्रतोल ब्रेख्त के नाटक और कविताओं तथा धर्मवीर भारती के कालजयी नाटक अंधायुग का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि हम सब को साहित्य अवश्य पढ़ना चाहिए जिससे हम मानवीय जीवन को अलग तरीके से समझ सकते हैं।

प्रणव खुल्लर जो कि संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार में संयुक्त सचिव है, ने वॉर एंड पीस, महाभारत आदि का जिक्र करते हुए कहा कि वे इन सबके साथ ब्रेख्त से भी प्रभावित हुए हैं। उन्होंने योगानंद की जीवनी पुस्तक का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि ये पुस्तक 1946 में प्रकाशित हुई थी और अभी तक 52 भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। ये है तो योगी की आत्मकथा लेकिन उसको इतने रोचक तरीके से लिखा गया है कि आप इसे उपन्यास की तरह पढ़ते हैं।

यह पुस्तक आधुनिक संसार और आध्यात्मिक संसार के बीच एक सेतु का कार्य करती है।

संयुक्त सचिव, नेटग्रिड, गृहमंत्रालय, भारत सरकार सतवंत अटवाल त्रिवेदी ने बचपन में रस्किन बॉंड और बाद में बुल्ले शाह का जिक्र करते हुए कहा कि किताबे हमें सोचने का मौका देती हैं। वे अगर हमारे साथ है तो हम जीवन को नए तरीके से समझने और जीने के गुर सीख सकते हैं। उन्होंने शम्सुर रहमान फारूखी की पुस्तक तथा द लिटिल प्रिंस का जिक्र करते हुए कहा कि पुस्तकों से हम प्यार और सादगी से जीना सीख सकते हैं। प्रख्यात ओडिशी, छऊ और मणिपुरी नृत्यांगना सोरेन लोवेन ने कुछ पुस्तकें जिन्होंने उनके जीवन को प्रभावित किया हो पर टिप्पणी करते हुए कहा कि पुस्तकों का संसार इतना विशाल है कि उसकी तुलना आसमान में चमकते सितारों से की जा सकती है।

उन्होंने एनी फ्रेंक की डायरी और सिमोन द बोउआर का जिक्र करते हुए कहा कि प्रदर्शनकारी कलाओं के लिए पुस्तकें एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है और उससे हमारा प्रदर्शन और जीवंत और बेहतर हो जाता है।

प्रख्यात पत्रकार एस. वेंकटनारायण तथा भारतीय डाक की सेवानिवृत्त महाप्रबंधक सुजाता चैधरी ने भी पुस्तकों से अपने संबंध के बारे में विस्तार से बातचीत की।

कार्यक्रम में भारी संख्या में लेखक, बुद्धिजीवी, छात्र एवं मीडियाकर्मी उपस्थित थे।